संस्मरण

संस्मरण गद्य की एक आत्मानिष्ठ विधा है। संस्मरणकार अपने व्यक्तिगत जीवन तथा अपने संपर्क में आए हुए अन्य व्यक्तियों के जीवन के किसी पहलू पर स्मृति के आधारपर प्रकाश डालता है। अपने व्यक्तिगत जीवन में हम नित्य ही अनेक व्यक्तियों के संपर्क में आते रहते हैं। साधारण व्यक्ति इन क्षणों को भूल जाता है किन्तु संवेदनशील कलाकार के अंतपटल पर ये क्षण सदा सर्वदा के लिए विद्यमान रहते हैं। इन क्षणों की स्मृति जब कभी उसे आकुल बना देती है, तभी साहित्य की सृष्टि होती है।

किसी घटना, स्थल या व्यक्ति से संबन्धित अनुभूति लेखक के हृदयपटल पर छाकर उसके मन के भीतर ही भीतर कुरेदती रहती है। यह अभिव्यक्ति के रूप में आकर संस्मरण बन जाती है। लेखक के जीवन में अनेक ऐसे क्षण आते हो, जब ऐसे व्यक्तियों से उनका संपर्क होता है, जिन्हें वह जीवन भर नहीं भुला पाता। उनकी स्मृति की अनुदित हो जो निधि बनकर अंतराल में छिपी होती है, भावावेश में संम्मरण के रूप में छलक पड़ती है। संस्मरण लेखक के निजी जीवन की सत्य घटना पर आधारित होता है ।

इस विधा का उद्भव और विकास पाश्चात्य साहित्य को प्रभाव में हुआ है। अंग्रेजी शब्द मेमोयर्स (memorirs) के समानार्थी शब्द के रूप में संस्मरण का प्रयोग किया जाता है। संस्मरण शब्द सम + स्मरण से बना है। इसका अर्थ है - 'सम्यक स्मरण' अर्थात किसी घटना, किसी व्यक्ति, अथवा वस्तु का स्मृति के आधारपर कलात्मक वर्णन करना संस्मरण कहलाता है।
अर्थात लेखक अपने अतीत के क्षणों, घटना, प्रसंग का स्मरण कर उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति करता है उसे संस्मरण कहलाया जाएगा।

परिभाषाएँ :--

डॉ. चौहान :-- "संस्मरण में लेखक किसी ऐसी घटना, स्थल या व्यक्ति से संबंधित निजी अनुभूति की स्मृति को साकारता प्रदान करता है, जो अंदर ही अंदर उसके मन को कुरेदती रहती है और अभिव्यक्ति के लिए उसके मन-प्राण को उद्वेलित करती रहती है।"
डॉ. गोविंद त्रिगुणायत :-- "भावुक कलाकार जब अतीत की अनंत स्मृतियों में से रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना में अनुरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं से विशिष्ट कर रोचक ढंग से यथार्थ रूप में व्यक्त कर देता है, तब उसे संस्मरण कहते है।
बाबू गुलाबराय :-- संस्मरण के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखते है कि " संस्मरण प्रायः घटनात्मक होते हैं, किन्तु वे घटनाएँ सत्य होती है और साथ ही चरित्र की परिचायक भी। उनमें थोड़ा सा चटपटेपन का भी आकर्षण होता है। संस्मरण चरित्र के किसी एक पहलू की झाँकी देते है।”
डॉ. शान्ति खन्ना :-- इनके अनुसार, "जब लेखक अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं से विशिष्ट कर रमणीय एवं प्रभावशाली रूप से वर्णन करता है, तब उसे संस्मरण कहते है ।"
डॉ. शिवप्रसाद सिंह :-- इन्होंने संस्मरण की व्याख्या नये ढंग से की है-- "संस्मरण ललित निबन्ध का बहुत ही लोकप्रिय प्रकार है। बीते काल और घटना को बार-बार दुहाकर न सिर्फ मनुष्य संतोष पाता है, बल्कि वह अपने वातावरण में घटित समसामयिकता की अतीत के चित्रों से तुलना करके अपने को जाँचता बदलता रहता है। संस्मरणात्मक निबन्ध मुख्य तथा महान व्यक्तियों के सानिध्य में अपने को तथा समाज को रखकर देखने की नई दृष्टि देते है।”

संक्षेप में हम कह सकते है कि " स्मृति के आधार पर किसी व्यक्ति या विषय के संबंध में चित्रित लेख या ग्रंथ को संस्मरण कहते है।
संस्मरण-लेखक जो कुछ देखता और अनुभव करता है, उसे अपनी अनुभूतियों से राग-रंजितकर प्रस्तुत कर देता है। वह इतिहासकार कि भाँति तथ्यपरक विवरण भर नहीं देता, अपनी अनुभूतियों को साहित्यिकता से अभिमंडित कर उपस्थित करता है। आत्मकथा और संस्मरण में अंतर यह है कि आत्मकथा में कथा का प्रमुख पात्र लेखक

स्वयं होता है, जब कि संस्मरण का प्रमुख पात्र कोईऔर होता है। रेखाचित्र की अपेक्षा संस्मरण में निजीपन अधिक होता है। युगजीवन की गंभीर समस्याएँ भी संस्मरण में मुखर हो उठती है। पर उन्हीं का चित्रण मुख्य रूप से नहीं किया जाता वे तो अनायास ही प्रकट हो जाती है।

संस्मरण साहित्य के के क्षेत्र में सबसे पहले आचार्य चतुरसेन शास्त्री के संस्मरण हमारे सामने आते है। इनके संस्मरणो में जीवन के विभिन्न भावपक्षों स्तरों विचारों के साथ-साथ राजनीति, संस्कृति आदि युग परक परिस्थितियों पर भी प्रकाश पड़ता है। इस दृष्टि से उनके 'पहली सलामी', लोकमान्य तिलक। मेरे बालसखा, शांति,जब मैं उनसे मिलने गया, उत्तम जलकण आदि संस्मरण महत्वपूर्ण है।

हिंदी के संस्मरण लेखकों में रामवृक्ष बेनीपुरी का स्थान महत्वपूर्ण है। आपके जेल-जीवन के मार्मिक संस्मरणों की जंजीरे और दीवारे संस्मरण संग्रह है | इनके संस्मरणों में विषय वर्णन के साथ स्वयं भी अनुभूतियों का भी मार्मिक चित्रण हुआ है ।

संस्मरण साहित्य के क्षेत्र में महादेवी वर्मा का शीर्ष स्थान है। महादेवी वर्मा मूलतः कवयित्री होने के कारण उनके संस्मरण में कवि हृदय की कोमलता, भावुकता और मधुरता मिलती है। इस दृष्टि से 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ,' 'पथ के साथी' और' स्मारिका' ये संस्मरण संग्रह प्रकाशित है।

अन्य संस्मरण लेखकों में अश्क जी किशोरीलाल वाजपेयी, कन्हैयालाल प्रभाकर, बनारसिदास चतुर्वेदी, विनयमोहन शर्मा आदि प्रमुख है।

संस्मरण के तत्व :--

जीवनी आत्मकथा के समान ही संस्मरण के पाँच स्वरूप विधायक तत्व है—

1] वर्ण्य विषय :--

अपने जीवन में व्यक्ति हररोज अनेकों अनुभवों से गुजरता है। इन अनुभवों के साथ जुड़े कुछ प्रसंग, घटना, दृश्य, स्थितियाँ, व्यक्ति ऐसे होते है, जो हमारे मनः पटल पर अपनी अलग पहचान बनाएँ हुए हमारी जिंदगी के अभिन्न हिस्से बन जाते है।संस्मरणकार इन्ही प्रसंग, घटना, दृश्य, स्थिति, या व्यक्ति, का स्मरण व्यक्त करता है। बहुदा संस्मरण राजनैतिक, साहित्यिक, क्षेत्र के व्यक्ति, धार्मिक संत, समाजसेवी अथवा उदात्त व्यक्तित्व को लेकर लिखे जाते हैं। लेकिन यह कोई आवश्यक मानदंड नहीं कि संस्मरण का वर्ण्य विषय ख्यात या उदात्तघटना स्थिति से जुड़ा हो। समाज के अपेक्षित, तिरस्कृत व्यक्तियों के मार्मिक प्रसंगों को लेकर भी संस्मरण लिखे जाते है। अत: वर्ण्य विषय का चयन बाह्य चीजों पर निर्भर नहीं बल्कि उसका सीधा संबंध लेखक के व्यक्तिगत जीवन से है उसके मन से है। इस संदर्भ डॉ. मनोरमा शर्मा ने ठीक ही लिखा है- " पात्र कैसा भी क्यों न हो, जब उसके गुण, स्मृति या सम्बद्ध घटना लेखक के मानस को आन्दोलित कर देती है, तभी स्मरणीय व्यक्ति या घाटना से प्रभावित हो संवेदना और अनुभूति के निचोड़ से संस्मरण का जन्म होता है।"

2] चारित्र चित्रण :--

संस्मरण में प्राय: चरित्रांकन, वर्णनात्मक होता है। लेखक चरित्र की दुर्बलता- सबलता मनोवैज्ञानिक शैली में घटनाओं के आधार पर सजीव चित्रण करता है। अपनी संक्षिप्तता के कारण चरित्रों का जमघट तथा उनके विस्तार के लिए संस्मरण में स्थान नहीं होता। चित्रित चरित्र के माध्यम से लेखक का व्यक्तित्व भी प्रकाशित होता है। चरित्र चित्रण में लेखक कहीं-कहीं अंतर्मुख हो जाता है।

3] परिवेश :--

संस्मरण में वास्तविकता का भान कराने में परिवेश का स्थान विशिष्ट होता है। अंतरबाह्य परिस्थियों की पृष्ठभूमि में ही चरित्र तथा लेखक की अनुभूति स्वाभाविक रूप में उभरकर सामने आती है। महादेवी वर्मा ने लिखा है-- "देशकाल की सीमा में आबद्ध जीवन ण इतना असंग होता है कि अपने परिवेश और परिवेशियों से उसका कोई संघर्ष न हो और न यह संघर्ष इतना तरल होता है कि उसके आघातों के चिह्न शेष न रहे।" तात्पर्य वातावरण का प्रयोग यथावश्यक पृष्ठभूमि के रूप में ही सार्थक होता है, उसके

अनावश्यक विस्तार के लिए संस्मरण में कोई स्थान नहीं। कुछ संस्मरण वातावरण प्रधान भी होते है जैसे - यात्रा वर्णन, शिकार वर्णन आदि ।

4] भाषा शैली **:--** संस्मरण की भाषा जितनी प्रवाहमयी, भाषानुकूल, एवं स्वाभाविक होगी, संस्मरण उतना ही सफल होगा। संस्मरण की कई शैलियाँ है-- आत्मकथात्मक, निबंधात्मक, डायरी पत्रात्मक आदि। संस्मरणकार अपने कथ्यानुरूप किसी शैली को क्यों न अपनाए उसमें प्रभावोत्पादकता, रोचकता,स्पष्टता होना आवश्यक है। संस्मरण की शैल्पिक विशेषताओं की ओर संकेत करते हुए डॉ भगवानदास वर्मा ने लिखा है - "जिंदगी के किसी भी पहलू के कुरेज न करनेवाले संस्मरण साहित्य की अपनी खास मुद्रा होती है। उसमें आत्मकथा को रेखाचित्र का विवरण, डायरी का समायबोध इंटरव्यू की नाटकीयता सभी इकट्ठे हो जाते है।
5] उद्देश्य **:--** सृष्टि में प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुभवों से दूसरों को लाभान्वित कराने को अत्यंत उत्सुक रहता है। संस्मरण में भी यही उद्देश्य निहित है।

संस्मरण के भेद **:--**
वर्ण्य विषय, रचना विधान आदि के आधार पर संस्मरण के कई भेद माने जा सकते हैं। जैसे जीवनी प्रधान, यात्रा संस्मरण, ऐतिहासिक शिकार संबंधी आदि
जीवनी तथा आत्मकथा के संदर्भ पाश्चात्य संस्मरण की दो शैलियाँ है, उसके आधार पर संस्मरण के मूलतः दो भेद है - एक मेमोयर्स (Memoirs) और दूसरा रेमिनिसेस (Reminiscence) डॉ. खेमचंद आनंद ने इसे क्रमशः आत्मसंस्मरण और संस्मरण कहा है। आत्मानिरुपक संस्मरण अर्थात लेखक अपने बारे में लिखता है तो इसे आमसंस्मरण कहा जाता है और जब वह दूसरे के बारे में लिखता है तो उसे संस्मरण कहा जाता है।